एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम कार्य

सत्र- तीन

एम.ए. हिंदी

सामान्य भाषा विज्ञान एवंहिंदी भाषा

Paper- MAH 310

इस पेपर का उद्देश्य भाषा का वैज्ञानिक ढंग से पठन-पाठन करना, जिसके अंतर्गत भाषा के विभिन्न रूप, वर्गीकरण, संसार के भाषा परिवार तथा अन्यशाखाओं के साथ संबंध, ध्वनि विज्ञान, अर्थ विज्ञान, रूप विज्ञान आदि का समुच्चय अध्ययन किया जाता है। इसी पेपर के अंतर्गत हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास, हिंदी के शब्द भंडारों की स्थिति एवं गति, हिंदी भाषा की समस्याएं एवं चुनौतियां के साथ-साथ लिपि के विकास जिस में देवनागरी लिपि के महत्व पर प्रकाशडाल कर छात्रों में भाषा के उद्भाव और विकास के संबंध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत कराना है।

प्रमुख ग्रंथ:

1. सामान्य भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेंद्रनाथ शर्मा
3. हिंदी भाषा इतिहास एवं स्वरूप- राजमणि शर्मा
4. हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम –रविंदनाथ श्रीवास्तव

एम. ए. हिंदी

भारतीय एवं पाश्चात्य कव्य शास्त्र

Paper- MAH 3 20

यह पेपर दो खंडों में विभाजित है। जिसमें पहला भारतीय काव्यशास्त्र एवं दूसरा पाश्चात्य कव्यशास्त्रहै। भारतीय काव्यशास्त्र के अंतर्गत छात्र कोकाव्यशास्त्रकी गहन जानकारीप्रदान कर उसे साहित्य-बोध का आधार देना प्रमुख उद्देश्य है। संस्कृत काव्यशास्त्र पर आधारित भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का विवेक विभिन्न आचार्यों की अवधारणाओं के साथ न केवल साहित्य की अर्थवान और प्रासंगिक समझ देने में कारगर होगा वरन सृजनात्मक साहित्य को व्याख्यायित एवं विश्लेषित कर उसमें निहित जीवन दर्शन एवंसाहित्यिकप्रतिमानों का सटीक विश्लेषण की चेतना भी विकसित करेगा। इस पेपर के दूसरे खंड पाश्चात्य कव्यशास्त्र का उद्देश्य छात्र को पश्चिम के प्रमुख साहित्य-चिंतकों एवं उनकी साहित्यिक वैचारिक स्थापनाओं से परिचित कराना है। इन साहित्य-चिंतकों की मान्यताएं , साहित्य-सर्जन की प्रक्रियाएं या उसकी विशेषताएं साहित्य की समझदारी विकसित करने में कितनी अर्थवान है , इस प्रश्न के आलोक में पश्चिम के प्रमुख साहित्यिकवादों एवं प्रतिमानों को रेखांकित करना इस खंड का केंद्रीय हिस्सा है।

प्रमुख ग्रंथ :-

1. भारतीय काव्य-शास्त्र : सत्यदेव चौधरी
2. भारतीय काव्य-शास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. पाश्चात्य काव्य-शास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा
4. साहित्य-सिद्धांत : राम अवध द्विवेदी
5. हिंदी आलोचना के बीज शब्द : बच्चन सिंह

एम.ए. हिंदी

अस्मितामूलक चिंतन - दलित एवं आदिवासी साहित्य

Paper- MAH 330

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों को दलित एवं आदिवासी साहित्य चिंतन की वैचारि की से अवगत कराना है। अन्य भाषाओं में अस्मितामूलक चिंतन के बरक्स हिंदी साहित्य में भी अस्मितामूलक चिंतन ने महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इस चिंतन के संदर्भ दलित एवं आदिवासी समाज की अस्मिता उन के सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य हैं। इन संदर्भों की व्याख्या एवं विश्लेषण के सहारे दलित एवं आदिवासी साहित्य की वैचारिकी एवं सरोकार को चिहिनत कर छात्रों में अस्मितामूलक चिंतन के अर्थ एवं अर्थवत्ता की समझ विकसित करना इस पेपर का हिस्सा है। इस पेपर के दो भागहैं, दलित एवं आदिवासी साहित्य की वैचारि की एवं दलित एवं आदिवासी साहित्य से संबंधित पाठ। दलित एवं आदिवासी चिंतन की वैचारिकी में साम्य के साथ वैषम्य भी है। दोनों चिंतन में वैचारिकी के स्तर पर साम्य एवं वैषम्य को रेखांकित करना भी इस पंपर का एक उद्देश्य है। इस पेपर में दलित एवं आदिवासी साहित्य से संबंधित पाठ के तहत लग भग सभी प्रचलित साहित्यिक विधाओं को स्थान दिया गया है। इन पाठों की व्याख्या एवं विश्लेषण के क्रम में छात्र दलित एवं आदिवासी साहित्य की बारीकियों से परिचित हो सकेंगे।

प्रमुख ग्रंथ:-

दलित साहित्य

1. दलित साहित्यका सौंदर्य शास्त्र – शरण कुमार लिम्बापे
2. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र – ओम प्रकाश वाल्मिकि
3. दलित साहित्य का समाज शास्त्र – हरिनारायण ठाकुर
4. आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श - देवेंद्रचौबे
5. अभिशप्तचिंतन से इतिहास चिंतन की ओर - डॉ. धर्मवीर
6. जाति व्यवस्था – सच्चिदानंद सिन्हा

आदिवासी साहित्य

1. जनजातीय संस्कृति - गयापाण्डेय
2. जनजातीय भारत - नदीयहसनैन
3. आदिवासी साहित्य-यात्रा - रमणिकागुप्ता (सं.)
4. आदिवासी कौन - रमणिकागुप्ता (सं.)
5. हाशिये की वैचारिकी - उमाशंकरचौधरी (सं.)
6. आदिवासी दर्शन और समाज - हरिराममीणा
7. मानव शास्त्र - डॉ. रामनाथशर्मा

एम.ए. हिंदी

अस्मितामूलक चिंतन – स्त्री साहित्य

Paper- MAH 340

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों को 'सबाल्टर्न डिस्कोर्स' के संबंध में जानकारी देना है। इस पेपर के माध्यम से समाज में स्त्री के स्थान, उसके शोषण वदमन चक्रोंके संबंधमें छात्रों को जानकारी देने का प्रयास किया जाएगा। पितृसत्ता के स्वरूपों, नियमों व उन के बनाए गये कायदों के कारण स्त्री जीवन किस प्रकार वंचित उपेक्षित जीवन जीने को विवश रहा है; इस की भी विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की जाएगी। पराधीन स्त्री विभिन्न वर्गों और समुदायों में बाँटी गयी है। जैसे-हिंदू स्त्री, मुस्लिम स्त्री, दलित एवं अल्पसंख्यक स्त्री, घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री आदि। इन सभी पराधीन स्त्रियों के शोषण के विभिन्न आयामों की जानकारी भी इस पेपर के माध्यम से दी जाएगी। समाज में स्त्रियोंके प्रति समानता का बोध उत्पन्न करना इस पेपर का मुख्य उद्देश्य होगा।

सदंर्भ ग्रंथ:-

1. दसे केंड सेक्स - सिमोनदबोउवार
2. श्रृंखला की कड़िया – महादेवी वर्मा
3. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास - सुमनराजे
4. स्त्री संघर्ष का इतिहास – राधा कुमार